अध्याय-8
मान्यताएं, उपलब्धियाँ,
सुझाव एंव भविष्य के लिए
अनुसंधान कार्य
अध्याय - 8

मान्यताएं, उपलब्धियाँ, सुझाव एवं भविष्य के लिये अनुसंधान कार्य

मान्यताएं

यह तो निर्विवाद सत्य है कि शर लेख्यद अधमद जी ही कथा, प्रत्येक चिन्तन श्रील बेगडक, विचारक, समाज शास्त्री, धर्म प्रचारक, जागरीतिक दृष्टि शिक्षाशास्त्री की आपनी मान्यताएं हुआ करती है । ऐसी भूमि के अभाव में विचारक स्थिर नहीं खड़ा रह पाता । ये मान्यताएं विकास प्रवर्तन अवश्य होती है , पर तैलसी हुई नहीं । जो मान्यता अन्ततः प्रश्नोपनुस्त्री नहीं है , वह जीवन के अभाव में केवल मुल धारणास (Dogma) हो जाती है । इतनी पूर्व आव्यक्ती के बाद शर लेख्यद जी की समायात्मक मान्यताओं को तीन भागों से देखें शामिल, अध्यात्मिक दृष्टि शिक्षात्मक जैसा कि शर लेख्यद जी के जीवन - दर्शन पुस्तक व्यवहार से यह ज्ञात होता है कि शर लेख्यद अधमद जी की शामिल नियमों के अनुसार ही कर्म - पथ पर बढ़ने को कहते हैं । अतिरिक्तता झंग से बढ़ते जाना खतरने से पूर्ण है । अध्यात्मिक विचारधाराओं के अन्तर्गत उनके जीवन के पवित्रतम कार्य कलापों का विवरण होता है । जो आस्तीय संस्कृति का मेस्वाबहुत है । आस्तीय संस्कृति नदी की शांत रिज़ोध धारा की आंति जन जीवन को प्रभावित करते हुए शादा ध्यातिशक्ति को प्राप्त करती हैं उसका स्वतंत्र शतां और शुद्ध है । वह शादा अभ्युदय की ओर संकेत करती है । अध्यात्मिक शतां शामिल मान्यताएं हैं ।
उपलब्धि

शेखद अहमद खाँ जी ने अपने विचारों को मूर्ति बनाये - जिससे शामिलिक शिक्षा की कठिनाईं कौर हो : - अहमद, सुलिमा विश्वविद्यालय अहमद देश स्थापना हेतु बोझ पड़े। भारत का प्रत्येक कोना - कोना छान जाला, श्रीमाणि माणी सुमादशा में भ्रम निक्या, लोगों के अपत्तय शुने, जायं (कविता) पढ़ी, विद्यालय के लिए अपने आपको समर्पित किया नीकरी से पेश ले ही और अपनी परिस्थिति पैदली स्थिति से यह समझ दिया कि व्यक्ति को निर्मलता पुर्व विज्ञान की आवश्यक वे वर्ण प्राप्ति के मार्ग प्रशास्त होते रहेंगे। इन वृद्ध शासकों के बालक, बुद्धि सभी राजा शिक्षा की तरह वहाँ करके शामिलिक पुर्व शैक्षिक विद्यालयों को भाजन कर अंक आदर्शपूर्ण शैक्षिक पद्धतियों कार्य करने में समर्थ हो शकता है।

युग्माद्रव एवं भविष्य के लिए अनुसंधान कार्य

1. शर शेखद अहमद खाँ के शैक्षिक आदर्शों के अध्ययन से यह जान होता है कि भविष्य में शिक्षा के विकास के लिए आजी और शी अनुसंधान किये जा शकते हैं।

2. जिस प्रकार से शेखद अहमद खाँ ने अंग्रेजी, उर्दू आदि की उन्नति के लिए प्रयास किये हैं, इससे यह जान होता है कि भविष्य में शिक्षा के विकास हेतु आजी शी शोध किया जा शकता है।

3. शर शेखद अहमद खाँ के जीवन-दर्शन का अध्ययन करने से यह जान होता है कि उन्होंने भारतीय शिक्षा में कितना योगदान किया है और उनके इस योगदान को ही बलि हम आधार मान लें तो आजी शी शर शेखद अहमद खाँ पर आजी शी अनुसंधान किया जा शकता है।

4. अनेक शिक्षा दाशविक और शर शेखद अहमद खाँ के शासकों को देखते हुए भविष्य में अनुसंधान कार्य किये जा शकते हैं।
5. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह विषयक विचार है कि यह इशारत अहमद खाँ के धार्मिक विचारों से समबिन्दित शिक्षा पर उनके पढ़ने वाले व्यापक प्रभाव पर अनुसंधान किया जा सकता है।

6. शहीद अहमद खाँ के जन्म का दिन विश्व विचारों का उनके शैक्षिक जीवन पर किया प्रभाव पड़ा और शामिल विचारों ने किस प्रकार भारत के शैक्षिक कार्यों को प्रभावित किया, इस पर भी अबील बहुत काफी शोध की आवश्यकता है।

7. समानांतर शिक्षा विद्यारंभ ने शहीद अहमद के शैक्षिक विचारों को कहाँ तक प्रभावित किया यह भी शोध का विषय है।

8. शहीद अहमद खाँ दूसरे भारतीय विचारों के शैक्षिक विचारों से कहाँ तक सहमत हैं इस पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

9. शहीद अहमद खाँ अंग्रेजों और अंग्रेजी से कहाँ तक प्रभावित हुए और उन्होंने भारतीय शिक्षा की ओर क्या संकेत दिये वह भी अबील शोध का विषय है।

10. शहीद अहमद खाँ भारतीय शिक्षा प्रक्रिया को कैसा बनाना चाहते थे तथा दूसरे भारतीय शिक्षा बिन्दु, किस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था लागू करना चाहते थे। दोनों में क्या अंतर था। इस पर भी अबील बहुत कार्य किया जा सकता है।

11. शहीद अहमद खाँ आर्य के लिए एक जैसी शिक्षा व्यवस्था चाहते थे अध्यात्मिक हिंदू और मुसलमानों को लिये आलम- आलम शिक्षा व्यवस्था के पक्षपाती थे। इस पर भी अनुसंधान किया जा सकता है।

12. शाम में शिक्षा व्यवस्था, प्रश्नोत्तरी नियंत्रण, पृष्ठभूमि आदि शैक्षिक शिक्षा के पक्षपात के विषय प्रश्न थे। इस पर भी कार्य किया जा सकता है।

13. शहीद जी के नामकरण व्यक्तित्व और कृतित्व को ध्यान में रखकर भी अनुसंधान किया जा सकता है।

इनके इस अध्ययन के उपरोक्त आधार पर भी अनुसंधान की आवश्यकता है।